IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

दलित चेतना का विमर्श - छप्पर उपन्यास

Dr. Pravinkumar P. Chauhan
Head, Department of Hindi and Assistant Professor
Shree Ambaji Arts College, Kumbhariya, Gujarat, India

भारतीय समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था, जाति, अश्पृश्यता, शोषण, दमन और उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष की लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। ईशा पूर्व गौतम बुद्ध के समय से आज तक अन्याय और वर्चस्व के विरुद्ध सामाजिक परिवर्तन के लिए धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन चलते रहे है। समय और काल परिवेश के दबाओ के फल स्वरूप यह दलित आंदोलन तीव्रता और ठहरावसे गुजरते हुए नया आकार ले रहा है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को अग्रसर करते हुए आज दलित साहित्य भी वर्ण व्यवस्था के खिलाफ सशक्त आंदोलन रहा है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में विभिन्न विषयों मे साहित्य सृजन का प्रारम्भ हुआ। जिसमे दलित साहित्यने अपनी अलग पहचान बनाई। विभिन्न दलित साहित्यकारोने अपनी लेखनी से दलितो के जीवन को उनकी व्यथा, वेदना, करुणा, उत्पीड़न, शोषण, अन्याय, अत्याचार, जुल्म और मानवीय पीड़ाओको साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास किया। जो काफी हद तक सफल रहा।